E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 4 | April 2026

विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की स्थिति

डॉ. अंजु बाला
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, यमुनानगर -135001

सारांश

हिंदी भाषा भारत की राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक विरासत और वैश्विक संवाद की एक सशक्त अभिव्यक्ति है। इक्कीसवीं शताब्दी में हिंदी केवल भारत तक सीमित न रहकर विश्व के अनेक देशों में अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान का विषय बन चुकी है। अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, जर्मनी, फ्रांस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश आदि देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी का शिक्षण विभिन्न रूपों में संचालित हो रहा है। इस शोध-पत्र में मैंने विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की वर्तमान स्थिति, उसके ऐतिहासिक विकास, उद्देश्यों तथा शैक्षिक महत्त्व का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि हिंदी किस प्रकार वैश्विक स्तर पर एक अकादमिक भाषा के रूप में अपनी पहचान बना रही है तथा किन चुनौतियों और संभावनाओं के बीच इसका विस्तार हो रहा है।

मुख्य शब्द: हिंदी शिक्षण, विदेशी विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय स्वरूप , भाषा अध्ययन, वैश्वीकरण

मूल आलेख

भाषा किसी भी समाज की आत्मा होती है। हिंदी भाषा भारतीय सभ्यता, संस्कृति, दर्शन और लोकजीवन की संवाहिका रही है। औपनिवेशिक काल के पश्चात जब भारत वैश्विक मंच पर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा, तब हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलने की प्रक्रिया ने गति पकड़ी। आज वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, प्रवासी भारतीय समुदाय और भारत की बढ़ती राजनीतिक–आर्थिक भूमिका के कारण हिंदी के प्रति विश्व-स्तर पर रुचि निरंतर बढ़ रही है। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण केवल भाषा-अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके अंतर्गत भारतीय साहित्य, संस्कृति, इतिहास, दर्शन, सिनेमा, समाज और समकालीन भारत का अध्ययन भी सम्मिलित है। हिंदी अब "विदेशी भाषा" के साथ-साथ "दक्षिण एशियाई अध्ययन" (South Asian Studies) का एक महत्त्वपूर्ण घटक बन चुकी है। अनेक विकसित देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी को स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध-स्तर तक पढ़ाया जा रहा है। कहीं यह वैकल्पिक विषय के रूप में है, तो कहीं स्वतंत्र विभाग के रूप में। यह स्थिति हिंदी के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप और उसकी उपयोगिता को प्रमाणित करती है।

शोध पत्र के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की वर्तमान स्थिति का देश-वार अध्ययन करना।
- हिंदी शिक्षण के ऐतिहासिक विकास और अंतरराष्ट्रीय प्रसार का विश्लेषण करना।
- प्रमुख विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन की प्रकृति को स्पष्ट करना।
- हिंदी शिक्षण में भारतीय संस्थाओं एवं प्रवासी भारतीयों की भूमिका अध्ययन करना।

*Corresponding Author Email: anjubala573@gmail.com
Published: 04 April 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i4.45652
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

- विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण से जुड़ी चुनौतियों और संभावनाओं का विवेचन करना ।

हिंदी का अंतरराष्ट्रीय प्रसार : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हिंदी का विदेशों में प्रसार किसी एक काल की घटना नहीं है, बल्कि यह एक दीर्घकालिक प्रक्रिया का परिणाम है। उन्नीसवीं शताब्दी में जब ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय श्रमिकों को मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद एवं टोबैगो जैसे देशों में ले जाया गया, तब हिंदी की विभिन्न बोलियाँ उन देशों में पहुँचीं। यही हिंदी के वैश्विक विस्तार की प्रारंभिक अवस्था थी।बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विश्वविद्यालयी स्तर पर हिंदी शिक्षण की शुरुआत हुई। ब्रिटेन, अमेरिका और रूस जैसे देशों में भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए विशेष विभाग स्थापित किए गए। शीतयुद्ध काल में रूस (तत्कालीन सोवियत संघ) में हिंदी साहित्य और भाषा का अत्यंत गहन अध्ययन हुआ।

स्वतंत्र भारत के बाद हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रसार को संस्थागत समर्थन मिला। भारत सरकार द्वारा स्थापित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) ने विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्यापन के लिए प्राध्यापक भेजने, छात्रवृत्तियाँ देने और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने का कार्य किया। आज हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। संयुक्त राष्ट्र, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, पर्यटन, फिल्म उद्योग और मीडिया में हिंदी की उपस्थिति निरंतर बढ़ रही है। यही कारण है कि विदेशी छात्र हिंदी सीखकर भारत की सामाजिक–आर्थिक संरचना को समझना चाहते हैं।हिंदी का अध्ययन अब केवल भाषाई कौशल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह भारत-अध्ययन (India Studies) का एक अनिवार्य माध्यम बन गया है। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि हिंदी एक जीवंत, सक्षम, सशक्त और वैश्विक भाषा है।

विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की स्थिति

अमेरिका में हिंदी शिक्षण की स्थिति

संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी शिक्षण की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ और संगठित दिखाई देती है। अमेरिका में दक्षिण एशियाई अध्ययन (South Asian Studies) के अंतर्गत हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन व्यापक रूप से किया जाता है। यहाँ हिंदी केवल एक विदेशी भाषा नहीं, बल्कि भारत की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समझ का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। अमेरिकी विश्वविद्यालयों में हिंदी का शिक्षण मुख्यतः तीन स्तरों पर होता है—

प्रारंभिक भाषा पाठ्यक्रम (Elementary Hindi) , उन्नत भाषा एवं साहित्य (Advanced Hindi & Literature) तथा शोध एवं क्षेत्रीय अध्ययन (Research & Area Studies) स्तर पर प्रमुख अमेरिकी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण :-

हार्वर्ड विश्वविद्यालय (हार्वर्ड यूनिवर्सिटी): हार्वर्ड विश्वविद्यालय में हिंदी का शिक्षण “दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग” के अंतर्गत होता है। यहाँ हिंदी भाषा के साथ-साथ आधुनिक हिंदी साहित्य, भारतीय समाज और सांस्कृतिक अध्ययन पर विशेष पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

येल विश्वविद्यालय (येल यूनिवर्सिटी): येल विश्वविद्यालय में हिंदी को उर्दू के साथ संयोजन में पढ़ाया जाता है। भाषा-प्रयोग, संवाद कौशल और साहित्यिक ग्रंथों का अध्ययन यहाँ का प्रमुख केंद्र बिंदु है।

कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले (यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया, बर्कले): यह विश्वविद्यालय हिंदी अध्ययन के लिए विश्व-प्रसिद्ध है। यहाँ हिंदी साहित्य, सिनेमा, अनुवाद अध्ययन और आधुनिक भारत पर विशेष शोध कार्य किए जाते हैं।

शिकागो विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो): शिकागो विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा को भारत के ऐतिहासिक

और दार्शनिक संदर्भों के साथ पढ़ाया जाता है।

अमेरिका में हिंदी शिक्षण को प्रवासी भारतीय समुदाय, भारतीय सांस्कृतिक संगठनों तथा भारत-अमेरिका संबंधों से भी व्यापक समर्थन प्राप्त है।

ब्रिटेन में हिंदी शिक्षण की स्थिति

ब्रिटेन में हिंदी शिक्षण की परंपरा अपेक्षाकृत पुरानी है। औपनिवेशिक काल में भारत के अध्ययन के अंतर्गत हिंदी भाषा पर अकादमिक ध्यान दिया गया। आज ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन एक सशक्त विषय के रूप में स्थापित है।ब्रिटेन में हिंदी शिक्षण की विशेषता यह है कि यहाँ भाषा के साथ-साथ भारतीय साहित्य, उपनिवेशोत्तर विमर्श, प्रवासी अध्ययन और सांस्कृतिक अध्ययन को भी समान महत्त्व दिया जाता है।

ब्रिटेन के प्रमुख विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण

लंदन विश्वविद्यालय (स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़– एसओएएस): लंदन विश्वविद्यालय का एसओएएस संस्थान हिंदी अध्ययन का प्रमुख केंद्र है। यहाँ हिंदी भाषा, आधुनिक साहित्य, भक्ति काव्य और समकालीन लेखन पर गहन अध्ययन कराया जाता है।

ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय (ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी): ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्ययन भारतीय भाषाओं के अंतर्गत किया जाता है। यहाँ हिंदी साहित्य और भाषाविज्ञान पर शोध-स्तरीय कार्य होते हैं।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी): कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिंदी को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषिक दृष्टि से पढ़ाया जाता है।

ब्रिटेन में हिंदी शिक्षण को प्रवासी भारतीय समुदाय तथा साहित्यिक संस्थाओं से विशेष प्रोत्साहन मिलता है।

कनाडा में हिंदी शिक्षण की स्थिति

कनाडा बहुसांस्कृतिक समाज वाला देश है, जहाँ भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। यही कारण है कि कनाडा के विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण का महत्त्व लगातार बढ़ रहा है।कनाडा में हिंदी भाषा को सांस्कृतिक पहचान और अकादमिक अध्ययन दोनों के रूप में देखा जाता है। यहाँ हिंदी को भाषा-कौशल के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के अध्ययन का माध्यम भी माना जाता है।

कनाडा के प्रमुख विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण

टोरंटो विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो): टोरंटो विश्वविद्यालय में हिंदी का शिक्षण दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग के अंतर्गत होता है। यहाँ भाषा-अध्ययन के साथ भारतीय साहित्य और समाज का विश्लेषण किया जाता है।

ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया): इस विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा और भारत अध्ययन से संबंधित पाठ्यक्रम संचालित होते हैं।

यॉर्क विश्वविद्यालय (यॉर्क यूनिवर्सिटी): यहाँ हिंदी को बहुभाषिक अध्ययन और सांस्कृतिक संवाद के संदर्भ में पढ़ाया जाता है।

कनाडा में हिंदी शिक्षण को भारतीय दूतावास, सांस्कृतिक परिषदों और स्थानीय हिंदी संस्थाओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त है।

अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा में हिंदी शिक्षण से विदित होता है कि हिंदी अब एक वैश्विक अकादमिक भाषा बन

चुकी है। यहाँ हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक समझ का सशक्त साधन है।

रूस में हिंदी शिक्षण की स्थिति

रूस (पूर्व सोवियत संघ) में हिंदी शिक्षण की परंपरा विश्व में सर्वाधिक सशक्त और संगठित मानी जाती है। बीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में भारत–रूस के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संबंधों के कारण हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को विशेष प्रोत्साहन मिला। रूस में हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि भारत की संस्कृति और दर्शन को समझने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम रही है।

रूसी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण में भाषा के साथ-साथ हिंदी साहित्य का गहन अनुवाद कार्य भी किया गया है। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा तथा आधुनिक हिंदी साहित्य के अनेक ग्रंथों का रूसी भाषा में अनुवाद हुआ।

रूस के प्रमुख विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण

मॉस्को स्टेट विश्वविद्यालय (लोमोनोसोव मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी): यह विश्वविद्यालय रूस में हिंदी अध्ययन का प्रमुख केंद्र है। यहाँ हिंदी भाषा, साहित्य और भाषाविज्ञान के साथ-साथ भारतीय दर्शन और इतिहास पर भी अध्ययन कराया जाता है।

सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट विश्वविद्यालय (सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट यूनिवर्सिटी): यहाँ हिंदी को ओरिएंटल स्टडीज़ के अंतर्गत पढ़ाया जाता है। हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति पर शोध-कार्य इस संस्थान की विशेषता है।

रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी फॉर द ह्यूमैनिटीज़: इस विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा के साथ भारतीय समाज और समकालीन भारत के अध्ययन पर ज़ोर दिया जाता है।

रूस में हिंदी शिक्षण की सुदृढ़ता का एक प्रमुख कारण वहाँ के विद्वानों की गहरी अकादमिक प्रतिबद्धता है।

बांग्लादेश में हिंदी शिक्षण की स्थिति

बांग्लादेश में हिंदी शिक्षण की स्थिति भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषिक निकटता के कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यद्यपि बांग्ला वहाँ की प्रमुख भाषा है, फिर भी हिंदी को समझने और सीखने की प्रवृत्ति व्यापक है। बांग्लादेश में हिंदी मुख्यतः भाषा, फिल्म, मीडिया और संचार के माध्यम से लोकप्रिय हुई है। विश्वविद्यालयी स्तर पर हिंदी को आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है।

बांग्लादेश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण

ढाका विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी ऑफ ढाका): ढाका विश्वविद्यालय में हिंदी का शिक्षण आधुनिक भारतीय भाषाओं के अंतर्गत किया जाता है। यहाँ हिंदी भाषा के साथ भारतीय साहित्य और संस्कृति का अध्ययन भी कराया जाता है।

राजशाही विश्वविद्यालय (राजशाही यूनिवर्सिटी): इस विश्वविद्यालय में हिंदी को वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है, जहाँ भाषा-कौशल पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

बांग्लादेश में हिंदी शिक्षण भारत–बांग्लादेश सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुआ है।

ऑस्ट्रेलिया में हिंदी शिक्षण की स्थिति

ऑस्ट्रेलिया में हिंदी शिक्षण अपेक्षाकृत नवीन है, किंतु अत्यंत तेज़ी से विकसित हो रहा है। प्रवासी भारतीयों की

बढ़ती संख्या और भारत–ऑस्ट्रेलिया के शैक्षिक सहयोग ने हिंदी अध्ययन को नई दिशा दी है।ऑस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालयों में हिंदी को आधुनिक भाषा, सांस्कृतिक अध्ययन और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में पढ़ाया जाता है।

ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण

मेलबर्न विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न): यहाँ हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति से संबंधित पाठ्यक्रम संचालित होते हैं।

सिडनी विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी): सिडनी विश्वविद्यालय में हिंदी को एशियाई भाषाओं के अंतर्गत पढ़ाया जाता है।

ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी (ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी): यह विश्वविद्यालय हिंदी को क्षेत्रीय अध्ययन और अंतरराष्ट्रीय संदर्भों में प्रस्तुत करता है।

एशियाई देशों में हिंदी शिक्षण

जापान, चीन, दक्षिण कोरिया और थाईलैंड जैसे देशों में हिंदी शिक्षण का दायरा निरंतर बढ़ रहा है। इन देशों में हिंदी को व्यापार, पर्यटन और कूटनीतिक संबंधों के संदर्भ में पढ़ाया जाता है।

- **टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज़ (जापान)**
- **बीजिंग फॉरेन स्टडीज़ यूनिवर्सिटी (चीन)** जैसे संस्थानों में हिंदी अध्ययन की सुदृढ़ परंपरा विकसित हो रही है।

हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में भारतीय संस्थाओं की भूमिका

विदेशों में हिंदी शिक्षण के विकास में भारत सरकार और भारतीय सांस्कृतिक संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है।

प्रमुख संस्थाएँ

- **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)**
- **केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा**
- **विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस**

इन संस्थाओं द्वारा प्राध्यापक नियुक्ति, छात्रवृत्तियाँ, पाठ्यपुस्तकें और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की प्रमुख चुनौतियाँ

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में हिंदी भाषा का अंतरराष्ट्रीय विस्तार निरंतर बढ़ रहा है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा, साहित्य, अनुवाद अध्ययन और भारतीय संस्कृति से संबंधित पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं। हिंदी अब केवल भारत की राजभाषा या सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम भर नहीं रही, बल्कि यह वैश्विक संवाद, व्यापार, मीडिया और कूटनीति के क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है।फिर भी विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण का विस्तार कई व्यावहारिक, शैक्षणिक और संरचनात्मक चुनौतियों से घिरा हुआ है। इन चुनौतियों का समुचित विश्लेषण किए बिना हिंदी के अंतरराष्ट्रीय विकास की दिशा निर्धारित नहीं की जा सकती। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाने के लिए केवल भाषागत दक्षता पर्याप्त नहीं होती, बल्कि अध्यापक को आधुनिक विदेशी भाषा-शिक्षण पद्धतियों, बहुसांस्कृतिक वातावरण और तकनीकी संसाधनों के उपयोग में भी पारंगत होना

चाहिए।वास्तविकता यह है कि कई विश्वविद्यालयों में योग्य हिंदी अध्यापकों की कमी देखी जाती है। अनेक बार ऐसे अध्यापक नियुक्त किए जाते हैं जो हिंदी के पारंपरिक साहित्य में दक्ष होते हैं, किंतु संप्रेषण-आधारित भाषा शिक्षण या अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं। इससे हिंदी शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा विद्यार्थियों की रुचि भी कम हो सकती है।

विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम कई बार पुराने या सीमित दृष्टिकोण वाले होते हैं। उनमें व्याकरण और साहित्य पर अत्यधिक बल दिया जाता है, जबकि संप्रेषण कौशल, व्यावहारिक हिंदी, समकालीन साहित्य, मीडिया भाषा और डिजिटल लेखन को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता।उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्री का अभाव भी एक गंभीर समस्या है। अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के स्तर और पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर तैयार की गई आधुनिक, बहुस्तरीय और मल्टीमीडिया आधारित सामग्री अभी भी सीमित मात्रा में उपलब्ध है। अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक जगत में अंग्रेज़ी का प्रभुत्व हिंदी जैसी भाषाओं के विस्तार के मार्ग में एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत करता है। छात्र प्रायः उन भाषाओं को प्राथमिकता देते हैं जिनकी उपयोगिता वैश्विक रोजगार और शोध के अवसरों से अधिक जुड़ी हुई मानी जाती है।इस कारण हिंदी को कई बार "वैकल्पिक" या "सांस्कृतिक अध्ययन" की भाषा के रूप में देखा जाता है, न कि व्यावसायिक या व्यावहारिक भाषा के रूप में। यह धारणा हिंदी शिक्षण के विस्तार को सीमित कर सकती है।

कुछ देशों में हिंदी विभागों को पर्याप्त वित्तीय सहायता नहीं मिल पाती। इसके परिणामस्वरूप नए पाठ्यक्रम प्रारंभ करने, शोध परियोजनाएँ चलाने, अतिथि व्याख्यान आयोजित करने या सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने में कठिनाई होती है।संसाधनों की कमी के कारण पुस्तकालयों में हिंदी साहित्य का पर्याप्त संग्रह नहीं हो पाता और डिजिटल सुविधाओं का विकास भी सीमित रह जाता है। इससे विद्यार्थियों के लिए हिंदी अध्ययन का वातावरण उतना समृद्ध नहीं बन पाता जितना होना चाहिए।

चुनौतियों के समाधान के संभावित उपाय

भारत सरकार, विश्वविद्यालयों तथा सांस्कृतिक संस्थानों को मिलकर विदेशी हिंदी अध्यापकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और अल्पकालिक पाठ्यक्रम आयोजित करने चाहिए। भाषा-शिक्षण की आधुनिक पद्धतियों, तकनीकी संसाधनों और बहुसांस्कृतिक कक्षा-प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। हिंदी शिक्षण को अधिक आकर्षक और उपयोगी बनाने के लिए संप्रेषण-केंद्रित पाठ्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए। इनमें अनुवाद अध्ययन, पत्रकारिता, सिनेमा, डिजिटल मीडिया, पर्यटन, व्यापारिक हिंदी ,व्यावहारिक हिंदी तथा तकनीकी हिंदी जैसे विषयों को शामिल किया जा सकता है। इससे हिंदी अध्ययन का व्यावहारिक महत्व बढ़ेगा।

ऑनलाइन पाठ्यक्रम, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, मोबाइल एप्लिकेशन, डिजिटल पुस्तकालय और आभासी कक्षाओं के माध्यम से हिंदी शिक्षण को अधिक सुलभ और वैश्विक बनाया जा सकता है।इस दिशा में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान जैसी संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। भारतीय दूतावासों, सांस्कृतिक केंद्रों और प्रवासी भारतीय समुदाय के सहयोग से हिंदी को सांस्कृतिक संवाद का सशक्त माध्यम बनाया जा सकता है। हिंदी साहित्यिक गोष्ठियाँ, फिल्म समारोह, नाट्य मंचन और भाषा-शिविर जैसे कार्यक्रम विदेशी विद्यार्थियों में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ा सकते हैं।

विदेशों में हिंदी शिक्षण की भविष्य की संभावनाएँ

इक्कीसवीं शताब्दी में हिंदी भाषा के वैश्विक विस्तार की संभावनाएँ अत्यंत उज्ज्वल दिखाई देती हैं। वैश्वीकरण, सूचना-प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और भारत की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय भूमिका ने हिंदी को केवल एक राष्ट्रीय भाषा के दायरे से बाहर निकालकर वैश्विक संवाद की भाषा बनने की दिशा में अग्रसर किया है। विशेष रूप से विदेशी विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी शिक्षण के प्रति बढ़ती रुचि इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण

संकेत है। भारत की आर्थिक और राजनीतिक शक्ति में निरंतर वृद्धि हिंदी के वैश्विक महत्व को बढ़ा रही है। जब किसी देश की वैश्विक भूमिका मज़बूत होती है, तो उसकी भाषा भी स्वाभाविक रूप से अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अधिक महत्व प्राप्त करती है। आज भारत विश्व अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभर रहा है, जिसके कारण व्यापार, कूटनीति और सांस्कृतिक संवाद के क्षेत्रों में हिंदी की उपयोगिता बढ़ती जा रही है। विदेशी छात्र और शोधार्थी भारत से जुड़ी संभावनाओं को देखते हुए हिंदी सीखने की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार और पर्यटन के क्षेत्र में भी हिंदी की उपयोगिता तेजी से बढ़ रही है। भारत एक विशाल उपभोक्ता बाजार होने के साथ-साथ पर्यटन का प्रमुख केंद्र भी है। विदेशी व्यवसायिक कंपनियाँ और पर्यटन उद्योग से जुड़े लोग हिंदी का ज्ञान प्राप्त करके भारतीय समाज और बाजार को बेहतर ढंग से समझना चाहते हैं। इससे विदेशी विश्वविद्यालयों में "व्यावसायिक हिंदी" और "पर्यटन हिंदी" जैसे पाठ्यक्रमों की माँग बढ़ रही है। यह प्रवृत्ति भविष्य में हिंदी शिक्षण को और अधिक व्यावहारिक तथा रोजगारोन्मुख बना सकती है। सूचना-प्रौद्योगिकी और डिजिटल माध्यमों का विकास हिंदी के अंतरराष्ट्रीय विस्तार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म, वर्चुअल कक्षाएँ, डिजिटल पुस्तकालय और भाषा-शिक्षण ऐप्स के माध्यम से हिंदी सीखना अब पहले की तुलना में कहीं अधिक सरल और सुलभ हो गया है। विदेशी विश्वविद्यालय अब मिश्रित (ब्लेंडेड) शिक्षण पद्धति अपनाकर ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यमों को जोड़ रहे हैं। इससे हिंदी शिक्षण की पहुँच उन देशों और क्षेत्रों तक भी हो रही है, जहाँ पहले इसकी कल्पना भी कठिन थी।

वैश्विक मंचों पर भारतीय सिनेमा, संगीत और मीडिया का प्रभाव भी हिंदी के प्रति रुचि को बढ़ाने वाला एक प्रमुख कारक है। बॉलीवुड फिल्मों, वेब-सीरीज़, हिंदी गीतों और सोशल मीडिया सामग्री ने हिंदी को सांस्कृतिक आकर्षण की भाषा बना दिया है। कई विदेशी छात्र हिंदी इसलिए सीखना चाहते हैं ताकि वे भारतीय फिल्मों और साहित्य को मूल भाषा में समझ सकें। इस सांस्कृतिक आकर्षण ने हिंदी को केवल शैक्षणिक विषय नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक अनुभव के रूप में स्थापित किया है।

इसके अतिरिक्त, प्रवासी भारतीय समुदाय भी हिंदी शिक्षण के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विश्व के अनेक देशों—जैसे अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, मॉरीशस, फिजी और खाड़ी देशों—में भारतीय मूल के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं। ये समुदाय अपने सांस्कृतिक और भाषाई मूल्यों को बनाए रखने के लिए स्थानीय विश्वविद्यालयों और सांस्कृतिक संस्थानों में हिंदी शिक्षण को प्रोत्साहित करते हैं। इससे हिंदी के प्रति नई पीढ़ी में भी जागरूकता और रुचि उत्पन्न होती है।

भविष्य की संभावनाओं के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रश्न हिंदी की अंतरराष्ट्रीय मान्यता का भी है। समय-समय पर यह माँग उठती रही है कि हिंदी को संयुक्त संघ (United Nations) जैसी वैश्विक संस्थाओं में आधिकारिक भाषा का दर्जा मिले। यदि ऐसा होता है, तो हिंदी के अध्ययन और शिक्षण को विश्व स्तर पर एक नई पहचान प्राप्त होगी। इससे न केवल कूटनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में हिंदी का उपयोग बढ़ेगा, बल्कि विदेशी विश्वविद्यालयों में इसके पाठ्यक्रमों और शोध कार्यों का विस्तार भी होगा।

शोध और ज्ञान की भाषा के रूप में हिंदी की संभावनाएँ भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आज हिंदी में विज्ञान, समाजशास्त्र, साहित्य, मीडिया अध्ययन और अनुवाद अध्ययन जैसे क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य हो रहे हैं। यदि इन शोधों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद और प्रसार किया जाए, तो हिंदी वैश्विक ज्ञान-परंपरा में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकती है। विदेशी विश्वविद्यालयों में "हिंदी अध्ययन केंद्र" स्थापित करके संयुक्त शोध परियोजनाएँ चलाई जा सकती हैं, जिससे अकादमिक सहयोग को नई दिशा मिलेगी।

विदेशों में हिंदी शिक्षण की भविष्य की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक और सकारात्मक हैं। आर्थिक, सांस्कृतिक,

तकनीकी और शैक्षणिक सभी स्तरों पर ऐसे अनेक कारक सक्रिय हैं, जो हिंदी को वैश्विक भाषा बनने की दिशा में अग्रसर कर रहे हैं। यदि इन संभावनाओं को संगठित और दूरदर्शी प्रयासों के माध्यम से साकार किया जाए, तो हिंदी भविष्य में केवल सांस्कृतिक पहचान की भाषा नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय ज्ञान, संवाद और सहयोग की प्रभावशाली भाषा के रूप में स्थापित हो सकती है।

निष्कर्ष

विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की स्थिति यह स्पष्ट करती है कि हिंदी एक जीवंत, समृद्ध और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्य भाषा बन चुकी है। अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश और एशियाई देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी का शिक्षण इस बात का प्रमाण है कि हिंदी केवल भारत की भाषा नहीं, बल्कि विश्व की साझा सांस्कृतिक धरोहर है। भविष्य में हिंदी शिक्षण को और प्रभावी बनाने के लिए पाठ्यक्रमों का आधुनिकीकरण भी आवश्यक है। केवल पारंपरिक व्याकरण और साहित्य पर आधारित शिक्षण से आगे बढ़कर संप्रेषण कौशल, अनुवाद तकनीक, मीडिया लेखन, तकनीकी हिंदी और अंतरसांस्कृतिक संवाद जैसे विषयों को शामिल करना होगा। इससे हिंदी शिक्षण अधिक उपयोगी और बहुआयामी बन सकेगा।

साथ ही, अध्यापक प्रशिक्षण और शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम भी हिंदी के अंतरराष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों को मिलकर विदेशी हिंदी अध्यापकों के लिए नियमित कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। इससे शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार होगा और हिंदी को आधुनिक भाषा-शिक्षण पद्धतियों के अनुरूप विकसित किया जा सकेगा।

हालाँकि चुनौतियाँ मौजूद हैं, परंतु संगठित प्रयासों, संस्थागत सहयोग और आधुनिक दृष्टिकोण के माध्यम से हिंदी को वैश्विक शिक्षा-परिदृश्य में और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है। यह शोध-पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि हिंदी का भविष्य अंतरराष्ट्रीय मंच पर उज्ज्वल और संभावनाओं से परिपूर्ण है।

संदर्भ सूची

1. चौधरी, ममता। “विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन: चुनौतियाँ और संभावनाएँ।” *हिंदी अनुशीलन*, खंड 15, अंक 3, 2018, पृ. 78–89।
2. गुप्ता, संजय। “वैश्विक संदर्भ में हिंदी का प्रसार।” *अंतरराष्ट्रीय हिंदी अध्ययन जर्नल*, खंड 8, अंक 1, 2021, पृ. 22–35।
3. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद। *विदेशों में हिंदी शिक्षण पर रिपोर्ट*. 2020।
4. मिश्र, विद्यानिवास। *हिंदी की विश्व यात्रा*. भारतीय ज्ञानपीठ, 2006।
5. भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय। “विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार।” 2023
6. शर्मा, कृष्ण कुमार। “विदेशों में हिंदी शिक्षण की वर्तमान स्थिति।” *भाषा शोध पत्रिका*, खंड 12, अंक 2, 2019, पृ. 45–60।
7. वर्मा, रामचंद्र। *हिंदी भाषा का वैश्विक परिप्रेक्ष्य*. राजकमल प्रकाशन, 2018
8. हार्वर्ड विश्वविद्यालय। *हिंदी भाषा कार्यक्रम विवरण*. 2022।
9. लंदन विश्वविद्यालय (एसओएएस) — हिंदी पाठ्यक्रम विवरण।
10. मास्को स्टेट विश्वविद्यालय — हिंदी अध्ययन कार्यक्रम।
11. विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस — प्रकाशन सामग्री।